

महालयवम्

पाताधिकारः

शास्त्री-III

Date 17.12.20  
Page 1

पातस्य गतगम्यसाधनप्रकारः—

पदे युग्मौजेर्कः समविषमगोलः सतमसस-

तदायातः पातस्वगत इतरत्वे निगदितात् ।

विभिन्ने गौले-यैदिह कृतशराङ्घ्रेर्लघुतरा

रवेर्दोर्भागाः स्यादिह रविपदान्यत्वमुचितम् ॥

अन्वयः— सतमसः अर्कः युग्मौजे पदे ~~सतमसः~~ समविषमगोलः

तदा पातः यातः निगदितात् इतरत्वे तु अगतः । इह विभिन्ने गौले  
येत् कृतशराङ्घ्रेः रवेः दोर्भागाः लघुतराः, इह रविपदान्यत्वम्  
उचितं स्यात् ।

तारा- अर्कः सूर्यः, यदि युग्मौजे पदे सतमसः साठवर्कत्,  
क्रमेण समविषमगोलः, तदा पातः, यातः गतः, स्यात् । निगदितात्  
पूर्वोक्तलक्षणात्, इतरत्वे निम्नरूपत्वे सति अगतः गम्यः, पातः स्यात् ।  
इह सूर्यः विभिन्ने गौले येत्, कृतशराङ्घ्रेः साधितशरत्तुर्भागात्,  
रवेः सूर्यस्य, दोर्भागाः कुजांशाः, लघुतराः, तदा इह रविपदा-  
न्यत्वम्, उचितं, स्यात् ।

भाषार्थः— साठवर्क और सायनसूर्य एक गोल में हों और  
सायनसूर्य समपद में हो अथवा साठवर्क और सायनसूर्य भिन्न गोलों  
में हों और सायनसूर्य विषमपद में हों तो पात ही युक्त है । इसी प्रकार  
साठवर्क तथा सायनसूर्य भिन्न गोल में हों और सायनसूर्य विषमपद में  
हो, अथवा उक्त दोनों भिन्न गोलों में हों और सायनसूर्य समपद में हो  
तो पात (क्रान्तियाम्य) होने वाला है, ऐसा समझना चाहिये ।

डॉ० सुद्विष्ट कुमार

सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)

रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,

पूरुचियाँ ।

## शास्त्री-III

Date: 18.12.20  
Page: 3

शरद्वर्षसाधनप्रकार: —

शैकादिके रविभुजांशदशांशके समा-

द्वारोऽर्कविश्वमनुष्टुप्सुडवोऽङ्गरामाः।

खाश्वत्वा द्विशती उडुगुणास्तु शराद्वराप्या

हीनोऽत्र सद्यपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात् ॥

अन्वयः— रविभुजांशदशांशके तु शैकादिके अर्कविश्वमनु-

ष्टुप्सुडवः अङ्गरामाः खाश्वत्वाः द्विशती उडुगुणाः हारः स्यात्। अत्र

हि ~~शरात्~~ शरात् हराप्या हीनः सः अपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात्।

तारा— रविभुजांशदशांशके शैकादिके शून्यमारुगैक-

दशादिके, कर्मण अर्कविश्वमनुष्टुप्सुडवः १२।१३।१४।१८।२६,

अङ्गरामाः ३६, खाश्वत्वाः ६०, द्विशती २००, उडुगुणाः ३२६ क्रमात्

हारः स्यात्। अत्र शरात् हराप्या हरमक्तशरतः प्रायलवद्या,

हीनः सः, अपमसंस्कृतये क्रान्तिसंस्काराय, स्फुटः स्यात्।

भाषार्थः— साधनसूर्य के भुजांशों में १० का भाग देने से

जो लब्धि मिले उसके बराबर में लिखें दृश्य हाराङ्क और शक्यिक

लब्धि के अन्तर से शेष अंशादि को गुणा करें। जो गुणनफल

हो उसमें १० का भाग दें। जो लब्धि मिले उसमें पहले लिखें दृश्य

हारांकों को जोड़ देने से योगफल हार होता है। फिर पहले लगे

दृश्य शर में हार का भाग दें। जो लब्धि मिले उसको शर में से बटा

देने से जो शेष रहे वह स्फुटशर है।

सूर्य के भुजांशों का दशमांश शून्य १ आदि के समान

हो तो क्रम से अर्क १२ विश्व १३, मनु १४, दृति १८, उडु २६ अङ्गराम

३६ खाश्वत्वा ६० द्विशती २०० उडुगुणा ३२६ में हारांक होते हैं।

डॉ० सुद्विपट कुमार

सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)

रा०७० सं० महावि० सुखसेना,

पूर्णिमा।

शरद्वर्षः ~~शर~~ शरसाधनप्रकारः

पञ्चधा सागराः पञ्चधा वह्यो द्वौ चतुर्धा कुम्भवाज्रमङ्गा इषोः।  
साठिकनादौर्लवैवशातुर्लवैक्यकं शेषमोष्माहनीवशासुक्स्थान्दरः।  
अन्वयः - सागराः पञ्चधा वह्यः पञ्चधा द्वौ चतुर्धा  
कुम्भवाज्रम् इषोः अङ्गाः स्तुः। साठिकनात् दौर्लवैषु अंशानुलवैक्यकं  
शेषमोष्माहनीवशासुक् शरः स्यात्।

गारा - सागराः पञ्चधा ४४४४४४ पञ्चधा वह्यः  
३३३३३३ चतुर्धा द्वौ २२२२२२ कु १ अ १ खा ० अम् ० इति  
इषोः शरद्वय अङ्गाः स्तुः। अतः साठिकनात् सशतसूर्यात्,  
दौर्लवैषु अंशानुलवैक्यकं खाडानामैक्यं कार्यम्। शेषमोष्मा-  
हनीवशासुक् शेषांशमोष्मखाडद्यात्पञ्चमांशेन युक्तं शरः स्यात्।

भाषार्थः - सागर ४ को पाँच स्थानों में लिखें। वहि ३  
को पाँच स्थानों में लिखें। द्वि २ को चार स्थानों में लिखें।  
कु १, अ १, खा ० अम् ० ये १८ शरांक हैं। साठवर्क के कुंजांशों  
में पू का भाग दें। जो लट्टि मिले, उतने शरांको का योग करें  
और एकाधिक लट्टिपरिमित शराङ्क से शेष अंशादि को गुणा  
करें। जो गुणनफल हो, उसमें पू का भाग दें। जो लट्टि मिले,  
उसमें पहले के शराकों का योग कर दें। ये शरसाधन होता है।

शराङ्कतालिका

|         |   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|---------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| क्रमांक | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| शरांक   | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३  | २  | २  | २  | २  | १  | १  | ०  | ०  |

डॉ० सुद्विपट कुमार  
सहाय प्राचार्य (ज्योतिष)  
२०३० सं० महावि० सुखसेना,  
पूर्णिमा।